'गेटिंग टू जीरो'

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2011-15 तक विश्व एचआईवी एड्स दिवस के लिए थीम गेटिंग टू जीरो चुना है। इसमें संक्रमण को खत्म करने के साथ ही इससे होने वाली मौत को भी जीरो करने की कोशिश है। जागरूकता के जरिये पूरी दुनिया में एचआईवी एड्स के मरीजों से भेदभाव को भी जीरो करना है।

एचआईवी एड्स विधेयक लागू हो तो बने बात

यूपीएनपी प्लस ने केंद्र सरकार से छह साल से लंबित कानून एचआईवी एड्स विधेयक 2007 को लागू करने की मांग की है। यूपीएनपी के अध्यक्ष नरेश यादव का कहना है कि इस कानून के आने से एचआईवी पॉजिटिव मरीजों को इलाज के साथ सामाजिक सुरक्षा मिलेगी। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट के जिन निर्देशों का पालन नहीं किया जा रहा उनको कानून का दर्जा मिल सकेगा।

नेशनल एड्स कंट्रोल सोसाइटी और यूनाइटेड नेशंस डवलपमेंट प्रोग्राम की रिपोर्ट में खुलासा

नौकरी करने परदेस गए 'एचआईवी' लेकर लौटे

केस - 1 : अमीनाबाद निवासी शाह आलम (बदला हुआ नाम) नौकरी के लिए ओमान गया। तीन साल वहां ड्राइवर रहा। इस दौरान आलम का वहां कई महिलाओं से संबंध रहा। तीन साल बाद वह वापस लौटा। कुछ समय बाद तबीयत खराब हुई तो डॉक्टरी जांच में एचआईवी पॉजिटिव पाया गया। शाह आलम से उसकी पत्नी भी संक्रमित हो गई। अब दोनों का इलाज चल रहा है।

केस - 2 : आजमगढ़ की रामबीबी (बदला हुआ नाम) की उम्र 33 साल है। पति मुंबई में एक फैक्ट्री में काम करता है। वहां वह दोस्तों के साथ रहता है। कुछ समय के लिए रामबीबी पति के साथ रहने गई। यहां उसके संबंध पति के दोस्त के साथ बन गए। साथ ही पति के साथ भी उसका संबंध बना रहा। अब रामबीबी एचआईवी पॉजिटिव है। रामबीबी के मुताबिक, यह बीमारी उसे पति के दोस्त से मिली।

अतुल भारद्वाज

लखनऊ। रोजी-रोटी के लिए देश-विदेश जाना आम बात है। पर ऐसे कई लोग हैं जो कमाई के साथ जिंदगी भर का दर्द भी साथ लेकर लौट रहे हैं और अपने परिवार को बांट रहे हैं। यूपी स्टेट एड्स कंट्रोल सोसाइटी की रिपोर्ट भयावह आंकड़ा पेश करती है। राज्य में एचआईवी संक्रमण के 1.06 लाख मरीजों में 50 फीसदी वे हैं जो नौकरी या बिजनेस के लिए बाहर गए।

बीमारी के फैलाव की बात करें तो लखनऊ सहित पूर्वी यूपी के जिले सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। यूपी स्टेट एड्स कंट्रोल सोसाइटी (यूपीसैक्स) के अधिकारियों के मुताबिक एचआईवी से प्रभावित 32 जिले चिह्नित किए गए हैं। इनमें 70 फीसदी जिले पूर्वी यूपी के हैं। इनमें लखनऊ भी शामिल है। इन जिलों में यूपी के प्रिवलेंस रेट से भी ज्यादा मरीज मिल रहे हैं। ज्यादा कमाई के लालच में खाड़ी देशों में जाने वालों में एचआईवी पॉजिटिव के मामले ज्यादा हैं। देश में एचआईवी के सबसे बड़े क्षेत्र सूरत और मुंबई हैं।

नेशनल एड्स कंट्रोल सोसाइटी (नाको) और यूनाइटेड नेशंस डवलपमेंट प्रोग्राम (यूएनडीपी) की पूर्वी यूपी के जिलों में की गई स्टडी के मुताबिक, अल्पसंख्यक समुदाय बहुल इन जिलों में एचआईवी से बचाव के कोई उपाय नहीं अपनाए जा रहे। इन जिलों में एचआईवी पॉजिटिव लोगों में 73 फीसदी ऐसे थे जो बाहर काम करने गए। वापस लौटे 60 फीसदी लोगों ने माना कि उनका किसी दूसरी महिला से संबंध रहा। खुद की जांच नहीं कराने से संक्रमण का पता नहीं चला और पत्नी भी सक्रंमित हो गई। नौकरी से वापस लौटने वाले परिवार में 74 फीसदी केस में पति-पत्नी दोनों ही एचआईवी पॉजिटिव पाए गए। 11-15 प्रतिशत महिलाओं ने भी पार्टनर के अलावा दूसरे साथी से यौन संबंध बनाए। जागरूकता की कमी के चलते महिला और पुरुष दोनों ने कंडोम का उपयोग भी नहीं किया था।

इन जिलों में खराब स्थिति

लखनऊ, कानपुर, रायबरेली, गोरखपुर, देवरिया, महाराजगंज, कुशीनगर, बांदा, बहराइच, गोंडा, वाराणसी, गाजीपुर, जौनपुर, आजमगढ़, बलिया, मऊ, सिद्धार्थनगर, इलाहाबाद, प्रतापगढ़, इटावा, फैजाबाद, अंबेडकरनगर, सुल्तानपुर, बदायूं, बस्ती, अलीगढ़, बिजनौर, बुलंदशहर, एटा, गाजियाबाद, मेरठ और मुजफ्फरनगर।

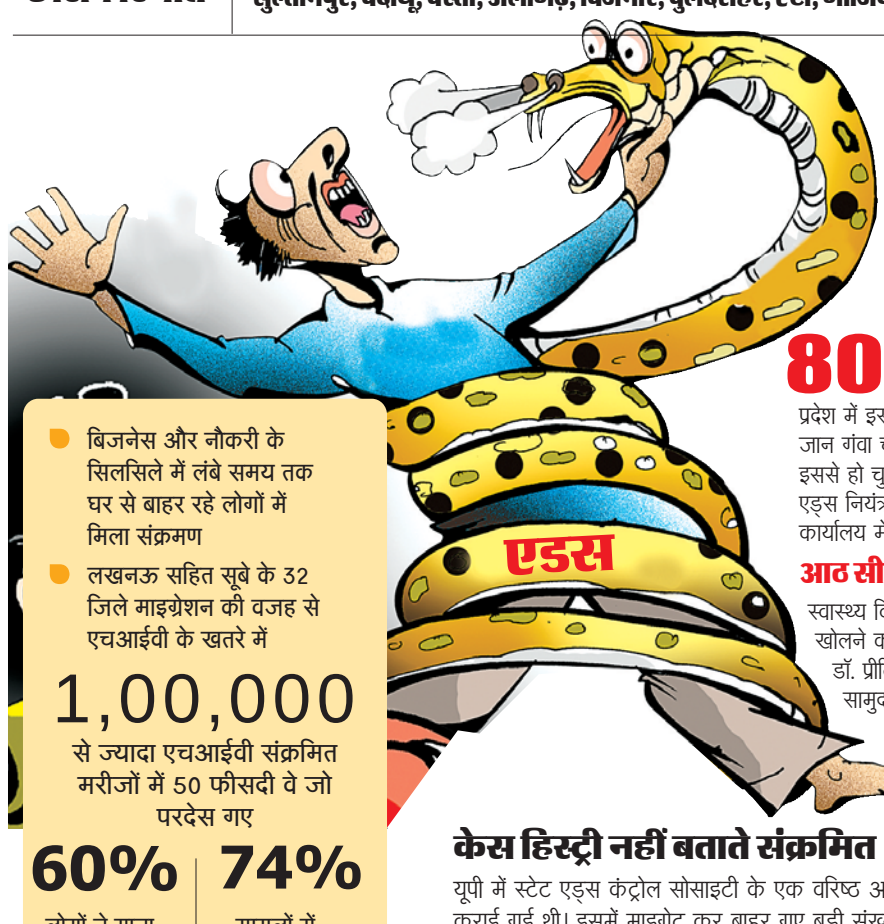

- बिजनेस और नौकरी के सिलसिले में लंबे समय तक घर से बाहर रहे लोगों में मिला संक्रमण
- लखनऊ सहित सूबे के 32 जिले माइग्रेशन की वजह से एचआईवी के खतरे में

1,00,000 से ज्यादा एचआईवी संक्रमित मरीजों में 50 फीसदी वे जो परदेस गए

60% लोगों ने माना बाहर रहने के दौरान दूसरी महिला से संबंध

74% मामलों में पति-पत्नी दोनों ही संक्रमित

बढ़ रही बीमारी फैलने की दर

स्टेट एपिडिमोलॉजिस्ट डॉ. प्रीति पाठक के मुताबिक, प्रदेश में एचआईवी पॉजिटिव पाए जाने का प्रिवलेंस रेट यानी बीमारी फैलने की दर 0.1 है। 2008 के अंत में इसे 0.09 आंका गया था। यूपी में सितंबर 2013 के आंकड़ो के मुताबिक 1 लाख 5 हजार 527 मरीजों को इलाज दिया जा रहा है। इनमें 30,207 एड्स पीड़ित है। वहीं एचआईवी संक्रमित लोगों में 66,426 युवा हैं।

805 जानें इस साल एड्स ने ली सूबे में

प्रदेश में इस साल नवंबर तक 805 लोग एड्स की चपेट में आकर जान गंवा चुके हैं। वहीं 2004 से अब तक 7,889 लोगों की मौत इससे हो चुकी है। ये जानकारी विश्व एड्स दिवस की पूर्व संध्या पर एड्स नियंत्रण सोसाइटी की डॉक्टर संगीता पांडेय ने सीएमओ कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में दी।

आठ सीएचसी पर मिलेगी एड्स जांच की सुविधा

स्वास्थ्य विभाग आठ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रो पर एड्स जांच केंद्र खोलने की योजना बना रहा है। राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी की डॉ. प्रीति पाठक ने बताया कि राजधानी के अलग-अलग सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर जांच केंद्र खोले जाएंगे। इसके अलावा प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में छह नए एंटी रेट्रो वायरल थेरेपी (एआरटी) केंद्र खोले जाएंगे। मौजूदा समय में 22 एआरटी केंद्र चालू हैं।

केस हिस्ट्री नहीं बताते संक्रमित

यूपी में स्टेट एड्स कंट्रोल सोसाइटी के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक यह स्टडी राष्ट्रीय स्तर पर कराई गई थी। इसमें माइग्रेट कर बाहर गए बड़ी संख्या में लोग एचआईवी का खतरा वापस लेकर लौटे। ऐसे लोगों पर और स्टडी की जरूरत है जिससे पता चल सके कि आखिर वे किस तरह और कहां सेक्सुअल नेटवर्क के संपर्क में आ रहे हैं। ये लोग आसानी से अपनी केस हिस्ट्री नहीं बताते। यही नहीं, सक्रमित पाए जाने पर इलाज कराने की जगह छिपाते हैं।

हर माइग्रेंट की होगी ट्रैकिंग

हमने सोर्स टू डेस्टिनेशन कॉरिडोर स्कीम शुरू की है। इसमें माइग्रेशन करने वाले व्यक्ति की मूल जगह, उसके रुकने के स्थान और कहां से संक्रमण मिला जैसी चीजों की ट्रैकिंग की जाएगी। यह कवायद राष्ट्रीय स्तर पर चलेगी। घर वापस आने वाले हर व्यक्ति की काउंसलिंग और जांच का प्रावधान होगा। अभी आजमगढ़, जौनपुर और गोरखपुर में यह योजना पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर शुरू की गई है। **-नरेंद्र कुमार,** एडिशनल प्रोजेक्ट डायरेक्टर, यूपीसैक्स

गलत धारणा बन रही मुसीबत

- संक्रमित बच्चे को स्कूल से निकाल देना
- नौकरी नहीं दिया जाना
- सामाजिक बहिष्कार
- घर से महिला को निकाल देना
- आंगनबाड़ी केंद्रों में पोषक आहार नहीं मिलना

गाइडलाइन में बदलाव से सोच भी बदल रही

एक समय था कि नवजात को एचआईवी का संक्रमण मां से मिलने की आशंका जताई जाती। इससे मां पर ही सवाल उठते जबकि इस दर्द को ले आने वाला पिता होता। मेडिकल साइंस में अब पिता की भी जिम्मेदारी तय हो चुकी है। एड्स कंट्रोल सोसाइटी को मिले निर्देश में मां से बच्चे को एचआईवी संक्रमण की गाइडलाइन अब बदलकर माता-पिता से नवजात को संक्रमण कर दिया गया है।

एचआईवी-एड्स

वह सब कुछ जो आप जानना चाहते हैं

Q आखिर एचआईवी को हमें जानने की जरूरत क्यों?

एचआईवी यानी ह्यूमन इम्यूनोडिफिशिएंसी वायरस। यही वह वाइरस है जो एड्स जैसी लाइलाज बीमारी का कारक होता है। इस वायरस से संक्रमित शख्स को एचआईवी पॉजिटिव कहा जाता है। एचआईवी केवल एक संक्रमण है जबकि एड्स एक सिंड्रोम। सिंड्रोम का मतलब ऐसी ढेर सारी बीमारियों के लक्षण जो एड्स की भयावहता को बताते हैं।

Q आखिर एचआईवी आया कहां से?

एचआईवी कहां से आया इसकी पूरी तौर से सही जानकारी नहीं है। इसका पहला केस 1981 में अमेरिका में पाया गया। इसी दौरान अफ्रीका में मामले पाए गए। एक जगह से दूसरी जगह माइग्रेशन ने इस वायरस को दूसरे देशों तक पहुंचा दिया।

Q क्या होता है संक्रमण होने के बाद?

करीब 10 साल तक एचआईवी संक्रमण बना रहने के बाद एड्स की स्थिति आ सकती है। वहीं सीडी4 काउंट कम होने से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता तेजी से कम होती है। इससे टीबी, हेपेटाइटिस का खतरा भी काफी बढ़ जाता है। ज्यादातर मरीजों में टीबी के लक्षण मिलते हैं।

Q ये सीडी4 काउंट कैसे किया जाता है?

खून का नमूना लेकर एंटीबॉडी और सीडी4 काउंट किया जाता है। एचआईवी पॉजिटिव पाए जाने और सीडी4 काउंट 200 सेल्स प्रति क्यूबिक मिमी से कम पाए जाने पर एंटी रेट्रोवायरल थेरेपी (एआरटी) की शुरुआत कर दी जाती है। इसके अलावा रेपिड टेस्ट किट, स्पॉट टेस्ट, पीसीआर टेस्ट, सेक्सुअली ट्रांसमिटेड इन्फेक्शन (एसटीआई) होने पर इंटीग्रेटिड काउंसलिंग एंड टेस्टिंग सेंटर (आईसीटीसी) पर जांच जरूर कराएं।

Q अगर कोई एचआईवी पॉजिटिव है तो वह क्या करें?

जांच में एचआईवी पॉजिटिव पाने पर संबंधित डॉक्टर से जरूरी राय और दवाएं लें। टीबी, सेक्सुअली ट्रांसमिटेड डिजीज की जांच करा लें।

Q एचआईवी संक्रमण से कैसे बचा जा सकता है?

एचआईवी संक्रमण से बचाव के लिए सुरक्षित यौन संबंध के तरीके चुनें। कंडोम का इस्तेमाल करें। 80 प्रतिशत तक मामले असुरक्षित यौन संबंध से ही होते हैं। दूसरे की इस्तेमाल की गई सुई, ब्लेड, संक्रमित खून का उपयोग कतई नहीं करें।

Q तो क्या मच्छर के काटने से भी संक्रमण फैल सकता है?

मच्छर के काटने से एचआईवी का संक्रमण नहीं फैलता। आलिंगन-चुंबन या साथ खाना खाने से भी यह संक्रमण नहीं फैलता।

Q क्या एचआईवी की कोई वैक्सीन है?

अभी तक विश्व स्वास्थ्य संगठन को वैक्सीन विकसित करने में मदद नहीं मिल पाई है। इसके लिए प्रयास जारी हैं। क्लीनिकल ट्रायल हो रहे हैं। संभावना है कि कुछ साल में वैक्सीन को विकसित कर लिया जाए।

Q क्या कंडोम पूरी तरह सुरक्षित होते हैं?

कंडोम संक्रमण से पूरी सुरक्षा देता है। लेकिन, कंडोम के फट जाने और डिफेक्टिव होने पर संक्रमण हो सकता है। हालांकि, जांच प्रक्रिया के सख्त होने के चलते वैज्ञानिक इसे सुरक्षित मानते हैं।

एक्सपर्ट कहते हैं

केस हिस्ट्री बड़ी समस्या

एचआईवी के मामले में सबसे बड़ी समस्या वायरस के खतरे से नहीं बल्कि लोगों का जानकारी छिपाना है। पूरी गोपनीयता बरती जाने के बाद भी लोग केस हिस्ट्री छिपाते हैं। उन्हें वायरस कहां से मिला, इससे काफी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इससे एचआईवी से निपटने में भी मदद मिलती है।

-प्रो. उदय मोहन, विभागाध्यक्ष, कम्युनिटी मेडिसिन, केजीएमयू

जागरूक करना होगा

आज भी लोगों में उतनी जागरूकता नहीं आ पाई है कि वे एचआईवी संक्रमित व्यक्ति को मुख्यधारा में ले सकें। वह उनके साथ खाना खाना नहीं चाहते। अगर अस्पताल में स्टाफ को पता चल जाए तो उनका व्यवहार बदल जाता है। आज जरूरत है कि उनके साथ पूरी सहानुभूति के साथ व्यवहार किया जाए। लोगों को जागरूक करना होगा कि एचआईवी का संक्रमण खून केजरिए ही फैलता है। हवा के संपर्क में आने पर यह तुरंत मर जाता है। **-डॉ. प्रीति पाठक** स्टेट एपिडिमोलॉजिस्ट, यूपीसैक्स

जरूरी नहीं बच्चे को संक्रमण हो

अगर माता-पिता दोनों एचआईवी संक्रमित हैं। इससे जरूरी नहीं कि पैदा होने वाले नवजात को भी एचआईवी का खतरा हो। करीब 30 प्रतिशत मामले में ही नवजात को मां से संक्रमण मिलने की यह आशंका होती है। हालांकि, ऐसे मामलों में जरूरी सावधानी बरतने की जरूरत है। यह संक्रमण गर्भावस्था, प्रसव या उसके बाद मिल सकता है। एचआईवी माता-पिता के होने पर इलाज से बच्चे को सुरक्षित रखा जा सकता है। इलाज से 96 प्रतिशत तक संक्रमण को नियंत्रित किया जा सकता है। **-डॉ. तूलिका चंद्रा** विभागाध्यक्ष, ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग

खरीदने से बेहतर अपनों से लें ब्लड

एचआईवी संक्रमित व्यक्ति बने प्रोफेशनल रक्तदाता, केजीएमयू में पहुंच रहे मामले

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। मरीज के लिए अगर खून की जरूरत है तो खरीदें नहीं बल्कि अपने किसी जानकार से ही लें। प्रोफेशनल ब्लड डोनर आपके मरीज को एक अनचाही बीमारी एचआईवी का संक्रमण दे सकता है। केजीएमयू के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग में ऐसे मामले सामने आ रहे हैं। जांच के बाद जब नमूने में एचआईवी का संक्रमण मिला तो रक्तदाता इलाज कराने की जगह गायब हो गया। केजीएमयू के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन की विभागाध्यक्ष डॉ. तूलिका चंद्रा के मुताबिक, हर 2000 में से एक मामले में एचआईवी का संक्रमण मिल रहा है। ऐसे लोग किसी मरीज के साथ रक्तदान करने के लिए आते हैं। केसेज सामने आने पर जब ऐसे लोगों की काउंसलिंग और एआरटी शुरू कराने की कोशिश की जाती है तो वे गायब हो गए। जानकारी मिली कि ये रक्तदाता मरीज के परिवारीजन पैसा देकर लाए थे। डॉ. चंद्रा का कहना है कि सुरक्षित खून हमें रक्तदान शिविरों से मिल रहा है। लोगों से भी मेरी अपील है कि वे प्रोफेशनल ब्लड डोनर से खून नहीं खरीदें।

- जांच में संक्रमण पाए जाने पर तलाश शुरू होते ही हो जाते हैं गायब
- जांच के बाद इलाज के लिए संपर्क करने पर हो रहे लापता

एचआईवी का प्रतिशत

2010	0.13
2011	0.18
2012	0.17
अक्तूबर 2013	0.13

(केजीएमयू के ब्लड बैंक में एचआईवी पॉजिटिव के केसेज जो रक्तदाता के खून के टेस्ट के दौरान सामने आए)

बंद करा दिया सिरिंज में ब्लड सैम्पल लेना

डॉ. चंद्रा बताती हैं कि केजीएमयू के ब्लड बैंक में सिरिंज में ब्लड सैम्पल लेना बंद कर दिया गया है। ऐसा मरीज के परिजन और स्टाफ दोनों की सुरक्षा के लिए किया गया है। सिरिंज में ब्लड सैम्पल चेक करने के दौरान या लाते समय भूल से किसी को भी निडिल चुभने से संक्रमण का खतरा रहता है। विभागों को सिरिंज की जगह वॉयल में नमूना भेजने को कहा गया है। इससे एचआईवी के साथ हेपेटाइटिस के खतरे को भी दूर करने में मदद मिल रही है।

जागरूकता ही बचाएगी खतरे से

लखनऊ (ब्यूरो)। यूपी स्टेट एड्स कंट्रोल सोसाइटी (यूपीसैक्स) ने एचआईवी पॉजिटिव लोगों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की कवायद शुरू की है। इसके लिए 32 जिलों के सबसे ज्यादा प्रभावित 109 ब्लॉकों को चुना गया है। यहां नशा के आदी लोगों, बाहर काम करने गए परिवारों के साथ समलैंगिक लोगों की भी काउंसलिंग का काम किया जाएगा। पब्लिक से जुड़े विभागों को इसमें भागीदार बनाया गया है। यूपीसैक्स के अफसरों के मुताबिक अभी 12 जिलों में पुलिस सहित दूसरे विभागों के साथ बैठक और कार्यशालाएं शुरू की गई हैं। इसमें एचआईवी संक्रमण से होने वाली बीमारी के साथ इसके कलंक को भी दूर करने का काम किया जाएगा। एडिशनल प्रोजेक्ट डायरेक्टर नरेंद्र कुमार का कहना है कि एचआईवी संक्रमित लोग अलग से जागरूकता शिविर में आने से बचते हैं। ऐसे में सामान्य लोगों के लिए जागरूकता शिविर रखे गए हैं। इनमें वे बेझिझक जानकारी ले सकते हैं।

एचआईवी पीड़ितों को समाज की मुख्य धारा में जोड़ने की कवायद

शुरू होगा जागरूकता अभियान

विश्व एचआईवी एड्स दिवस से यूपीसैक्स प्रदेश के 20 जिलों में एक महीने के लिए विशेष जागरूकता अभियान शुरू कर रहा है। इस दौरान रोड शो और जागरूकता शिविर आयोजित किए जाएंगे।

समस्या आपकी समाधान Dr. Advice से

प्रश्नः डा. साहब मेरी उम्र 52 साल की है। मेरे दाहिने घुटने में 5–6 महीने से दर्द हो रहा है तथा मुड़ने में बहुत तकलीफ होती है। मैं ऑपरेशन नहीं कराना चाहता हूँ, कोई आयुर्वेदिक दवा बताये। अजय सिंह, दिल्ली

उत्तरः आप **REPL** निर्मित **ऑर्थोविट कैप्सूल** एक कैप्सूल सुबह और एक कैप्सूल रात को सोते समय लें और ऑर्थोविट ऑयल से प्रभावित जोड़ों की मालीश करें काफी लाभ होगा।

प्रश्नः डा. साहब मेरी उम्र 23 वर्ष है, अत्यधिक गलत आदतों के कारण मुझमें बहुत ज्यादा कमजोरी आ गई है, और स्त्री के स्पर्श मात्र से हीं कपड़े गंदे हो जाते हैं। मधुरेन्द्र, देहरादून

उत्तरः गलत संगत या बुरी आदत के कारण अक्सर ये सब होता है। आप अपने काम पर ध्यान दें और **विगोरा 2000** की 7 शीशी का कोर्स करें निश्चित फायदा होगा।

प्रश्नः मैं 33 वर्षीय विवाहित पुरूष हूँ मेरी पत्नी की शिकायत है कि मैं उसका पुरा साथ नहीं दें पाता हूँ। जिससे मै काफी चिंतित रहता हूँ। कोई अच्छा और हानि रहित उपाए बतायें। आविद, फिरोजाबाद।

उत्तरः आप निराशा मन से निकाल दें और **REPL** का विगोरा 5000 का 6 शीशी का कोर्स करें एवं विगोरा ऑयल से इंद्री पर मालिस करें। यह होमियोपैथिक लिक्युड दवा है जिसका कोई भी साइड इफेक्ट नही है।

प्रश्न : मेरे पति अक्सर रात में नये–नये तेल, तिल्ला प्रयोग किया करते थें। तत्काल तो किसी में फायदा होता था और किसी में नहीं लेकिन अब कोई तेल, तिल्ला भी असर नही करता है। उचित दवा बताने की कृपा करें। ममता, हरियाणा

उत्तर : बाजार में उपलब्ध ढेर सारी तेल, तिल्ला जो लोगों को बड़े–बड़े सब्जवाग दिखाकर अपना उत्पाद बेचते हैं। परिणाम आपके सामने है। आप अपने पति को **REPL का विगोरा हाई पावर** दिन में तीन बार ¼ कप पानी में 20–20 बूंद दें और हाई पावर मुसली 1 कैप्सूल प्रत्येक दिन रात में सोते वक्त दूध के साथ में दें। यह दवा जाँचा, परखा और परिस्कृत है।

प्रश्न : मेरी उम्र 61 वर्ष है। शिश्न में सिकुड़ापन आ गया है, पत्नी कहती है तुम बुढ़े हो गये हो बहुत बुरा लगता है। कोई स्थायी उपचार बताएं। किशोर, फरीदाबाद

उत्तरः आप विगोरा **5X** का 6 शीशी का कोर्स कीजिए और सुबह–शाम कामसुत्रम् ऑयल से दो महीने तक लगातार मालिश करें इसका असर वर्षो रहेगा। आपके लायक होंगे।

प्रश्नः डा. साहब मैने टी.वी. पर विज्ञापन देखकर वासनोउत्पति के लिए एक हलवा तरह की दवा मंगवाया उस दवा से फायदा तो कुछ नहीं हुआ उल्टा पूरी रात सिर दर्द से छटपटाता रहा। कोई आयुर्वेदिक और हानिरहित दवा बताएं। ईश्वरी राय, गजियाबाद।

उत्तरः ईश्वरी जी, कुछ दवा निर्माता बड़े–बड़े विज्ञापन के माध्यम से उपभोक्ताओं को अपने भ्रम जाल में फसाते है और अपने दवा में सिर्फ सिल्डेनाफील मिलाकर बेचते है जो शरीर के लिए बहुत ही हानिकारक है। मेरे सुझाव से आप **REPL** निर्मित सुपर सोनिक कैप्सूल समय से दो घंटा पहले लें। यह दवा पूर्णतः आयुर्वेदिक है एवं इसका कोई भी साइड इफेक्ट नहीं है।

प्रश्नः मेरी उम्र 26 साल है। एक बच्चे है। समस्या यह है कि मेरे वक्ष अविकसित हैं, जिसके कारण अपने ससुराल में सब लोगों के बीच खड़े होने पर बहुत हीनभावना महसूस होती है। रितीका सिन्हा, अजमेर।

उत्तरः स्तनों का संपूर्ण विकास नही होने के अनेक कारण है, जैसे हार्मोन्स की कमी, अनुवांशिक। आप चिन्ता मन से निकाल दें एवं **REPL** का **Breastriim Oil** स्तनो पर सुबह–शाम दिये गये निर्देश के अनुसार 3 माह तक मसाज करें। इसके नियमित इस्तेमाल से स्तन में उभार आयेगा एवं आकर्षक नजर आएंगी।

प्रश्नः मै 36 वर्षीय विवाहित स्त्री हूँ। मैं पिछले एक वर्ष से पानी गिरने की समस्या है और मेरी जनांग भी काफी ढीली हो गई है। कोई हानिरहित उपचार बतायें। मिनाक्षी सिन्हा, दिल्ली

उत्तरः मिनाक्षी जी, आप विगोरा 1000 दिन में 2 बार 15–15 बूँद आधा कप पानी में मिलाकर पियें और **Virgin Oil** को अंदरूनी हिस्से पर लगाएं। यह बिल्कुल ही हानिरहित दवा हैं।

प्रश्नः मेरा उम्र 41 वर्ष है। शादी को दस साल हो चुके है। डा. साहब, दिक्कत यह है कि अब कुछ समय से जब भी मै सम्भोग करता हूँ तो जल्दी थक जाता हूँ। सैक्स की इच्छा होती है, पर स्तम्भन ज्यादा नहीं हो पाता। कोई हानि रहित उपाय बताएं। सतीश साह, गोरखपुर

उत्तरः शक्ति में कमी होने का बहुत सा कारण हो सकता है जैसे बढ़ती उम्र, अत्यधिक भाग–दौड़, मानसिक परेशानी आप धर के महौल को खुशनुमा बनाकर रखें और **विगोरा हाईपावर** दिन में तीन वार 1/4 कप पानी में खाने खाने के आधे घंटे बाद लें और **हाईपावर मुस्ली ऑयल** से पुरूषांग पर प्रतिदिन दो बार मालिस करें।

चिकित्सीय परामर्श के लिए स्वपता लिखित डाक लिफाफा निम्न पते पर भेजें :– **REPL** प्लाजा, तीसरा तल्ला फेडरल, पटना–801505

सम्पर्क करें : 09559779777

किसी भी रोग संबंधी निदान के लिए Dr. Advice पुस्तिका (होमियोपैथिक) निकटतम् स्टॉकिस्ट से मुफ्त प्राप्त करें।

डिस्ट्रीब्यूटर : खरया मेडिकल एजेन्सी, कानपुर, फोन: 3018093, 9415127822, 07897037497

स्टॉकिस्ट: लखनऊ: 4004131, 9559779777, 2619121, 9389209876, 9336957355, 26531745, 941533512, 9450643712, 4028988, **निषादगंज:** 4004131, **इन्द्रानगर:** 9839011359, **केशरबाग:** 2627665, **अलीगंज:** 9838605111, **तोपदरबाजा:** 9415753149, **बहराईच:** 9984789940, 2232468, **फैजाबाद:** 9889173298, 223653, 223640, 9838566595, 222595, 224052, **सुल्तानपुर:** 9839902004, **गोण्डा:** 9452771571, 9628820855, 9335893619, 9305870881, 9451028579, **लखीमपुर:** 9839332370, 257491, **सीतापुर:** 9305686432, 248448, **बलरामपुर:** 9305870881, **लालकुआँ:** 9838353318

एचआईवी पीड़ितों से बचते हैं निजी अस्पताल

अमर उजाला ब्यूरो

- लखनऊ समेत तीन जिलों में स्टिंग का खुलासा
- 95 फीसदी मामलों में इलाज से कर देते हैं इन्कार
- सुप्रीम कोर्ट के अनुसार लौटा नहीं सकते अस्पताल

लखनऊ। 95 फीसदी निजी अस्पताल या डॉक्टर एचआईवी पॉजिटिव या एड्स के मरीजों का इलाज करने से इन्कार कर देते हैं। यहां तक कि पथरी जैसे छोटे ऑपरेशन के लिए भी उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। यह स्थिति तब है जबकि सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दे रखा है कि कोई भी सरकारी या निजी अस्पताल एचआईवी पॉजिटीव मरीजों को इलाज या ऑपरेशन के लिए मना नहीं कर सकते। यह सच सामने आया है यूपी नेटवर्क फॉर पीपुल लिविंग विद एचआईवी एड्स (यूपीएनपी प्लस) के एक स्टिंग में। स्टिंग के दौरान लखनऊ, इलाहाबाद और कानपुर के 20 निजी नर्सिंग होम में पथरी जैसे ऑपरेशन के लिए संपर्क किया गया। इनमें से केवल एक अस्पताल ने ऑपरेशन के लिए हां किया। जबकि अन्य सभी अस्पतालों ने गंभीर मामला बताते हुए मरीज को मेडिकल कॉलेज जाने के लिए कह दिया। उनका साफ तौर पर कहना था कि यह सामान्य मरीज का केस नहीं है। कुछ नर्सिंग होम ने तो पल्ला झाड़ने को यहां तक कह डाला कि उनके यहां सुविधा नहीं मिल पाएगी।

....तो क्या कार्रवाई से बनेगी बात : सुप्रीम कोर्ट के आदेश को जब नर्सिंग होम मानने को तैयार नहीं हैं तो क्या उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए? हमने यही सवाल यूपीएनपी प्लस के अध्यक्ष नरेश यादव से किया। उनका कहना है, कुछ नर्सिंग होम पर कार्रवाई करने से समस्या का हल नहीं निकलेगा। सभी नर्सिंग होम को इस दिशा में जागरूक किए जाने की जरूरत है। वह सवाल उठाते हैं कि अब इलाज के लिए हर कोई मेडिकल कॉलेज तो नहीं जा सकता। वह कहते हैं, यूपीसैक्स के सामने भी यह मुद्दा उठाया गया था। उनका कहना है कि ऐसे नर्सिंग होम के नाम बताइए।

30,000 को नहीं मिल पा रहा इलाज

एचआईवी संक्रमित लोगों की लड़ाई लड़ रहे नरेश यादव का कहना है कि यूपी में करीब 70,000 लोग एआरटी के लिए पंजीकृत हैं। इनमें से केवल 40,000 को ही इलाज मिल रहा है। इससे साफ है कि सोशल स्टिग्मा खत्म करने में पूरी सफलता नहीं मिल पा रही है।